मसीह के कठिन शब्दों को ग्रहण करने के लिए तैयार रहो।

प्रभु के द्वारा कहे गए सभी शब्द सरल नहीं थे और न ही सामान्य समझ के अनुसार तुरंत स्वीकार किए जा सकते थे।

ऐसे समय भी आए जब उन्होंने अपने शिष्यों से कहा:

मत्ती 10:37-39

“जो पिता या माता से मुझसे अधिक प्रेम करता है, वह मुझ योग्य नहीं है; जो पुत्र या पुत्री से मुझसे अधिक प्रेम करता है,
वह मुझ योग्य नहीं है।
जो अपना क्रूस नहीं उठाता और मेरे पीछे नहीं आता, वह मुझ
योग्य नहीं है।
जो अपना जीवन पाता है, वह खो देगा; और जो मेरे कारण अपना जीवन
खो देता है, वह पाएगा।”

कल्पना कीजिए उस समय की: मसीह अभी क्रूस पर नहीं चढ़े थे, और किसी ने यह नहीं सोचा था कि वह कभी अपराधियों की तरह लकड़ी के खंभे पर नंगा चढ़ाए जाएंगे। फिर भी, मसीह अपने शिष्यों से क्रूस उठाने की बात कर रहे थे, जैसे वे पहले से जानते हों कि इसका मतलब

क्या है।

आज की दृष्टि से इसे समझना कठिन नहीं लगता, पर सोचिए: कोई राष्ट्रपति कह दे कि जो मंत्री बनना चाहता है, उसे पहले बम पकड़ना होगा और किसी भी समय अपने जीवन को बलिदान करने के लिए तैयार रहना होगा… आप सोचेंगे, “ये क्या शब्द हैं?”

मसीह के लिए भी ऐसा ही था। क्रूस अपराधियों के लिए था, बुरे लोगों के लिए। लेकिन एक नेक व्यक्ति के द्वारा क्रूस की बात सुनना कठिन था।

एक और कठिन वचन है:

यूहन्ना 6:53-56

“येशु ने उनसे कहा, ‘सच, सच मैं तुम्हें कहता हूँ, यदि तुम मनुष्य के पुत्र का मांस न खाओ और उसका रक्त न पियो, तो तुम्हारे भीतर जीवन नहीं है।
जो मेरा मांस खाता और मेरा रक्त पीता है, वह अनंत जीवन पाएगा, और मैं उसे अंतिम दिन में जीवित करूँगा।
क्योंकि मेरा मांस सच्चा भोजन है और मेरा रक्त सच्चा पेय है।
जो मेरा मांस खाता और मेरा रक्त पीता है, वह मुझमें रहता है

और मैं उसमें।’”

सोचिए, अगर कोई आज कहे कि उसका मांस खाओ और रक्त पीओ, तो क्या आप उसे पागल नहीं समझेंगे? इसी तरह, उन्होंने कहा कि वह स्वर्ग से आए हुए ब्रेड हैं, या वह तीन दिन में मंदिर को पुनः बनाएंगे… ऐसे शब्दों के कारण कई शिष्य उनसे पीछे हट गए।

यूहन्ना 6:60-63

“उनके शिष्यों में से कई ने यह सुनकर कहा, ‘यह वचन कठोर है,
कौन इसे सुन सकता है?’
पर येशु ने देखा कि उनके शिष्य बड़बड़ा रहे हैं, और कहा, ‘क्या तुम्हें यह आश्चर्यजनक लगता है?
अब यदि तुम मनुष्य के पुत्र को देखोगे कि वह वहाँ जाता है
जहाँ से वह आया था?
आत्मा जीवन देती है; मांस कुछ नहीं कर सकता। मैंने जो शब्द तुम्हें कहे हैं, वे आत्मा और जीवन हैं।’”

आज भी मसीह लोगों को अपने पीछे आने के लिए बुलाते हैं। हर बात तुरंत स्पष्ट नहीं होती। जब तक आप उनके शिष्य हैं, आपको विश्वास और आज्ञाकारिता में रहना होगा। जब वह कहें, “यह मत करो,” तो बिना

समझे उनका पालन करें। जब वह कहें, “अपने वस्त्र बदलो, आभूषण और ऐश्वर्य त्याग दो,” तो हिचकिचाएं नहीं – इसका मतलब वही है जो उन्होंने कहा।

जब वह कहें, “ऐसे मित्रों से दूर रहो,” या “यह काम छोड़ दो,” तो दूसरों की राय या अगले दिन खाने के बारे में मत सोचो। कारण वह बाद में बताएंगे। लेकिन उस समय तुरंत आज्ञाकारिता करें।

प्रभु ने अपने शिष्यों को केवल इतना कहा: “मेरे पीछे चलो” – और वे बिना जाने कि कहाँ जाना है, सब छोड़कर चल पड़े। उन्होंने कठिन शब्दों को सहा, जब तक अर्थ स्पष्ट नहीं हुआ। कई लोग इसे सहन नहीं कर पाए और पेंटेकोस्ट तक नहीं पहुंचे। लेकिन प्रभु के ग्यारह शिष्य और बारहवें में से एक ने आज्ञा मानी और पेंटेकोस्ट तक पहुंचे – और परमेश्वर ने उन्हें चर्च के स्तंभ बना दिया।

हमेशा याद रखें: मसीह के शब्द आत्मा और जीवन हैं, भले ही आप अभी उन्हें न समझें।

इब्रानियों 11:18-19

“वह विश्वासपूर्वक अपने पुत्र को बलिदान करने के लिए तैयार

था, और सोच रहा था कि यदि परमेश्वर उसे जीवित कर सकते हैं, तो मृत्यु में भी उसे पुनर्जीवित कर सकते हैं।”

आज स्वीकार करें कि आप मसीह के लिए अपना जीवन खो दें, यह जानते हुए कि एक दिन आप उसे पाएंगे।

प्रभु आपको आशीर्वाद दें।

JIUNGE NA GROUP LETU LA WHATSAPP HAPA >> WHATSAPP GROUP….

Share on:
WhatsApp